

## आम आदमी की पत्रकारिता और वैकल्पिक मीडिया

डॉ. नीलम ऋषिकल्प,

आजीवन शिक्षण संस्थान,  
दक्षिण परिसर, दिल्ली विश्वविद्यालय

सिटीजन जर्नलिज्म, सहभागी लोकतन्त्र और स्ट्रीट जर्नलिज्म जैसे नामों से प्रचलित आम आदमी की पत्रकारिता आज के दौर में मेन स्ट्रीम मीडिया के समान ही महत्वपूर्ण सामाजिक व आर्थिक मुद्दों पर सूचनाएँ एकत्र करने तथा उनका विश्लेषण व वितरण करने की प्रक्रिया में अहम भूमिका निभा रही है। सहभागी पत्रकारिता की महत्ता बताते हुए संचार विद्वान व लेखक बवमन और विलिस ने अपनी एक पुस्तक में लिखा है: “The intent of this participation is to provide independent, reliable, accurate, wide ranging and relevant information that a democracy requires.”

लेखक का यह विचार बिल्कुल सही है क्योंकि एक स्वस्थ समाज की जरूरत भी यही है कि उसमें कार्यरत मीडिया भी स्वस्थ, नैतिक और सन्तुलित हो। पत्रकारिता महज चन्द व्यावसायिक पत्रकारों की बपौती बन कर रहे यह कतई जरूरी नहीं है, आम आदमी की भागीदारी उसे एक नई दिशा प्रदान कर सकती है। खोजी मीडिया को इसके लिए सराहा जाना चाहिए क्योंकि आम आदमी की पत्रकारिता का वह रोल मॉडल रहा है। हमेशा से नकारे जाने वाले आम आदमी जो कि लाचार हैं, शक्तिहीन हैं, बेजुबां और कमजोर हैं, को सहानुभूति देते हुए इस नए प्रकार की पत्रकारिता ने मेन स्ट्रीम मीडिया से अलग एक नए वैकल्पिक मीडिया को जन्म दिया है।

मेन स्ट्रीम मीडिया (जैसे कि समाचारपत्र, रेडियो, टेलीविजन, पत्रिकाएँ, फिल्म आदि)

व्यावसायिक होने के कारण किसी खास विषय पर वैकल्पिक सूचनाएँ प्रदान करता है। इसके ठीक विपरीत वैकल्पिक मीडिया (जैसे कि इन्टरनेट, व्यक्तिगत ब्लॉग्स, फोटो, वीडियो फोटो जो कि मोबाइल फोन पर भी फिल्माए गए हो सकते हैं) में आम आदमी के विचार उन्हीं की भाषा में, उन्हीं के क्षेत्र से, उन्हीं के निजी माध्यमों द्वारा प्रसारित, प्रकाशित व वितरित किए जाते हैं। इसके साथ ही समाचारों और सूचनाओं से सम्बन्धित स्वतंत्र वेबसाइट जैसे कि कनज्यूमर रिपोर्ट, ड्राज रिपोर्ट, नव पब्लिक, थर्ड रिपोर्ट, ओमी न्यूज, Digital journal.com) ग्राउन्ड रिपोर्ट, व केन रेडियो जैसी वीडियो प्रसारण साइट भी इस कार्य में संलग्न हैं।

गौरतलब है कि आम आदमी के लिए वैकल्पिक मीडिया एक नई उम्मीद के रूप में उभर कर सामने आया है। “सूचना प्रौद्योगिकी के इस युग में तो हर आदमी खबरची की भूमिका अदा करने लगा है। क्योंकि आप अपने आसपास जो कुछ भी हो रहा है, उसे सोशल मीडिया के जरिए वायरल कर दुनिया के किसी भी कोने में उस घटनाक्रम का आँखों देखा हाल पहुंचा रहे हैं।”<sup>1</sup> वैसे मेनस्ट्रीम मीडिया की अपनी कुछ सीमाएँ हैं। अक्सर आम आदमी व बुद्धिजीवियों की जुबां से यह भी सुनने में आता है कि जन मीडिया समाचार प्रस्तुति व विश्लेषण में तथ्यों को तोड़-मरोड़ कर प्रस्तुत करता है। इन सब आरोपों के कारण कई बार उसकी छवि धूमिल भी हुई है। लेकिन वैकल्पिक मीडिया के साथ-साथ

आदमी के विचार जुड़े होने के कारण उसे अधिक सटीक, सन्तुलित, नैतिक और वास्तविक माना जाता है। सन् 2005 में अमेरिका में जब संचार विषय पर आयोजित एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में संचारविदों ने वैकल्पिक मीडिया पर कुछ इस तरह से अपने विचार प्रस्तुत किए जिसका सारांश है कि “The world needs alternative media and alternative media needs credibility.”

उल्लेखनीय है कि विश्वसनीयता प्रत्येक मीडिया की पहचान मानी जाती है। संचार विद्वानों ने कई बार इस पर अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा है कि जन-माध्यम जितना विश्वसनीय होगा उतना ही पॉपुलर बना रहेगा। आज के इस नए तकनीकी युग में विश्वसनीयता वैकल्पिक मीडिया की पहचान बनती जा रही है। इन सब खूबियों के साथ वितरण, प्रकाशन, प्रसारण और श्रोताओं के आधार पर भी वैकल्पिक मीडिया ने अपनी एक अलग पहचान बना ली है। लेकिन फिर भी मेन स्ट्रीम मीडिया और वैकल्पिक मीडिया एक दूसरे के पूरक हैं। सीएनएन, आईबीएन, एनडीटीवी, इंडिया टीवी और न जाने कितने ही मेन स्ट्रीम मीडिया में शामिल जन माध्यम वैकल्पिक मीडिया का लाभ उठा कर उन के द्वारा एकत्र सूचनाओं को ब्रेकिंग न्यूज में शामिल करते हैं। सन् 1960 में अब्राहम जपरेड द्वारा फिल्माई गई अमेरिकी राष्ट्रपति जॉन एफ कैंनेडी हत्याकांड की वीडियो क्लिपिंग आम आदमी की पत्रकारिता में एक मील का पत्थर साबित हुई है। अब्राहम जपरेड को आम आदमी की पत्रकारिता का वंशज माना जाता है। महज इतना ही नहीं 11 सितम्बर को वर्ल्ड ट्रेड सेन्टर पर हुए आतंकी हमले की वीडियो क्लिपिंग सबसे पहले आम आदमी के द्वारा ही फिल्माई गई, जिसे बाद में प्रतिष्ठित समाचार चैनलों ने प्रसारित किया। 11 जुलाई को मुम्बई में हुए आतंकी हमले व राहुल राज हत्याकांड आदि आम आदमी की पत्रकारिता के अनूठे उदाहरण हैं।

आम आदमी की पत्रकारिता में अगर भागीदारी की बात करें तो दिन-प्रतिदिन हो रही घटनाओं व सूचनाओं के विश्लेषण में उन की भागीदारी शामिल रहती है। कुछ समय पहले जहाँ समाचारपत्र, पत्रिकाएँ या फिर यूँ कहें कि प्रेस ही एक मात्र सूचनाओं के वितरण का साधन हुआ करते थे उस समय में आम आदमी की पत्रकारिता में भागीदारी पम्फलेट, टेलीग्राफ या फिर पत्रों के माध्यम से हुआ करती थी। लगभग अठारहवीं शताब्दी में सूचना क्रांति के साथ ही आम आदमी की पत्रकारिता का रूप भी बदल गया। टेलीविजन के अविष्कार ने आम आदमी की पत्रकारिता को एक नया मोड़ दिया है जिसमें आम आदमी को खुल कर अपने विचार प्रस्तुत करने का मौका मिला। प्रेस और टेलीविजन की पत्रकारिता में आम आदमी अपने विचारों को अभिव्यक्त करने में समर्थ तो था लेकिन सिर्फ सूचनाओं में भागीदारी तक ही सीमित था हालांकि प्रोडक्शन का कार्य मेन स्ट्रीम मीडिया के द्वारा ही किया जाता था। लेकिन डिजिटल टेक्नॉलाजी ने इसमें एक क्रांतिकारी परिवर्तन ला दिया है। अब विचारों की अभिव्यक्ति के साथ-साथ आम आदमी ने सूचना कार्यक्रमों का निर्माण भी स्वयं करना शुरू कर दिया है। सिटीजन जर्नलिज्म में नॉन-प्रोफेशनल जर्नलिज्म जैसे कि ‘Now Public and Cyber Journalist’ आदि शामिल हैं। कुछ लोग ब्लॉग भी उपयोग में लाते हैं, जिनका जिक्र हमने पहले भी किया है। “इंटरनेट एक ऐसा माध्यम उभर कर सामने आया है जहां हिन्दी के कुछ मुट्ठी भर ब्लागर्स-मोडरेटर्स ने ऐसा काम कर दिखाया है जो हज़ारों करोड़ के बुनियादी ढांचा वाले न्यूज़ हाउस लाखों के पैकेज पर काम करने वाले अपने कर्मियों की बदौलत भी नहीं कर पाए।”<sup>2</sup>

सिटीजन जर्नलिज्म की वेबसाइट आम आदमी को अपने विचारों को अभिव्यक्त करने की स्वतंत्रता देती है। आम आदमी अपने कटाक्ष, लेख व आलेखों के द्वारा पाठक व दर्शकों के समक्ष

अपने विचार अभिव्यक्त कर सकता है। इसके साथ ही पाठक व दर्शक भी प्रतिक्रिया अभिव्यक्त कर सकते हैं। इससे लाभ यह हो रहा है कि विभिन्न क्षेत्रों के लोग एक नई प्रकार की पत्रकारिता और समाचार व सूचनाओं से परिचित हो रहे हैं। आम आदमी की पत्रकारिता ने लोगों को नई शक्ति प्रदान की है। वैसे मेन स्ट्रीम मीडिया की कुछ हरकतों के कारण भी वैकल्पिक मीडिया की तरफ लोगों का ध्यान खींचा है। हिमकर श्याम अपने एक लेख में लिखते हैं कि "मुख्यधारा की पत्रकारिता से मोहभंग की स्थिति है और विकल्पों की तलाश शुरू हुई हो गयी है। वैकल्पिक मीडिया के रूप में अलग-अलग प्रयोग किये जाने लगे हैं। वेब पत्रकारिता और सोशल मीडिया के विस्तार ने पत्रकारिता को नया रूप दिया है। नागरिक आधारित पत्रकारिता के विभिन्न मंचों की सुगबुगाहट बढ़ रही है। इसके साथ ही नेटवर्किंग और सोशल साइट्स की उपस्थिति एक दीवानगी के रूप में बढ़ रही है।"<sup>3</sup>

लेकिन यह विश्वास और भरोसा तभी बना रह सकता है जब आम आदमी की पत्रकारिता तथ्यपूर्ण, सटीक और विश्वसनीय हो। इसके लिए यह जरूरी है कि जिस भी विषय पर लिखा जाए उसका गहराई से अध्ययन किया जाए तथा श्रोता को उसमें शामिल किया जाए, हो सके तो प्रमाण एकत्र करके ही सूचना को प्रस्तुत करें। सूचना लेखन से पूर्व एक बार अच्छे से तथ्यों को जान लें, भ्रांतियों से दूर रहना सराहनीय होगा, इसके साथ ही सम्बन्धित कानूनों का पालन किया जाए तथा आलोचना करते समय अपशब्दों का प्रयोग न किया जाए।

अगर इतिहास के पन्नों को पलटें तो आम आदमी की पत्रकारिता का प्रचलन 1988 में अमेरिकी राष्ट्रपति चुनाव से अधिक हुआ है। यह प्रचलन उन विख्यात पत्रकारों द्वारा प्रारम्भ हुआ जो कि मेन स्ट्रीम मीडिया की खामियों को स्वीकार कर चुके थे। शुरुआती दौर में यह प्रवाह

इसलिए अग्रसर हुआ ताकि आम आदमी को मेन स्ट्रीम मीडिया में जारी दिशाहीन पत्रकारिता के खिलाफ आवाज उठाने के लिए उत्साहित किया जा सके। प्रारम्भ में इसे व्यावसायिक पत्रकारों द्वारा पर्यावरण, यातायात की समस्या या फिर अर्थव्यवस्था जैसे मुद्दों पर विशेष प्रोजेक्ट तैयार करने के लिए किया गया, जिसके लिए व्यावसायिक पत्रकारों द्वारा आम आदमी की भागीदारी को स्वेच्छा से स्वीकार किया गया क्योंकि इसमें श्रम, धन और समय सभी की सुविधा थी जो कि व्यावसायिक पत्रकारों के लिए मुश्किल था। लेकिन सभी पत्रकारों और संपादकों को इस श्रेणी में शामिल करना न्यायोचित नहीं होगा, क्योंकि बहुत से संपादक व पत्रकार इस विचार के विरोधी रहे हैं। उनका मानना है कि न्यूज़ रूम में आम आदमी की दखलअंदाजी अगर रही तो इससे पत्रकारिता की गंभीरता को खतरा हो सकता है।

गौरतलब है कि साठ-सत्तर के दशक में आम आदमी की पत्रकारिता का जो प्रचलन इतनी तेजी से आगे बढ़ रहा था लगभग 2003 तक आते-आते 'पीव सेन्टर स्टोरी' के साथ ही इस आंदोलन के दरवाजे बंद होते नजर आने लगे, क्योंकि इस स्टोरी में भेदभाव पूर्ण जो रिपोर्टिंग की गई उसकी आलोचना अमेरिका समेत विश्व के कई देशों में हुई। फिर भी नए संचार युग में हर रोज एक नई संचार तकनीक से हम रूबरू हो रहे हैं। आम आदमी की पत्रकारिता को एक नई जान मिली है। इस सम्बन्ध में उमेश चतुर्वेदी की बात गौर करने वाली है, वह लिखते हैं कि "इंटरनेट के आने से पहले तक सभी माध्यमों की अपनी स्वतंत्र पहचान और स्पेस था। लेकिन इंटरनेट ने इसे पूरी तरह बदल डाला है। इंटरनेट पर स्वतंत्र समाचार साइटें भी हैं तो अखबारों के अपने ई संस्करण भी मौजूद हैं। स्वतंत्र पत्रिकाएं भी हैं तो उनके ई संस्करण भी आज कंप्यूटर से महज एक क्लिक की दूरी पर मौजूद हैं। इसी तरह टेलीविजन और रेडियो के

चैनल भी कंप्यूटर पर मौजूद हैं। कंप्यूटर का यह फैलाव सिर्फ डेस्क टॉप या फिर लैपटॉप तक ही नहीं है। बल्कि यह आम-ओ-खास सबके हाथों में मौजूद पंडोरा बॉक्स तक में पहुंच गया है।<sup>4</sup> इसी का इस्तेमाल आज आम आदमी कर रहा है।

आज विश्व स्तर पर आम आदमी स्वयं समाचार एकत्र कर उनको संचारित व प्रचारित कर रहा है। 2004 में आए सुनामी कहर की अधिकतर वीडियो क्लिपिंग आम आदमी ने ही रिकार्ड की जिसे बाद में मेन स्ट्रीम मीडिया के जरिए प्रसारित किया गया। इतना ही नहीं जिन लोगों को उपेक्षा का सामना करना पड़ा है उस तबके पर भी ये मीडिया फोकस कर रहा है। "दलित, ट्राइबल, उत्पीड़क समुदाय आज सोशल मीडिया को एक वैकल्पिक मीडिया के रूप में अपने सामाजिक मुद्दों से लेकर सामाजिक अन्याय, उत्पीड़न व हिंसा के विरुद्ध एक हथियार के रूप में प्रयोग कर रहे हैं, जो पहले मेन स्ट्रीम मीडिया में संभव नहीं था।"<sup>5</sup>

उल्लेखनीय है कि प्रत्येक सिक्के के दो पहलू होते हैं हालांकि इन सभी गुणों के साथ आम आदमी की पत्रकारिता दिनों-दिन अग्रसर हो रही है वहीं विषय विशेषज्ञों की आलोचनाओं का सामना भी उसे करना पड़ रहा है। अनेकों बार न्यूयार्क टाइम्स में विद्वानों ने आम आदमी की पत्रकारिता को यह कहते हुए गलत ठहराया है कि यह किसी धर्म, क्षेत्र, संघ और समुदाय से प्रभावित हो सकती है, जिसका खामियाजा कालांतर में समाज को भुगतना पड़ सकता है। निकोलस लेमैन विसैंट और टोम गरुबिस जैसे परम्परागत पत्रकारों ने आम आदमी की पत्रकारिता को गलत करार देते हुए यह दलील प्रस्तुत की है कि केवल व्यावसायिक पत्रकार ही समस्याओं व घटनाओं को सही, निष्पक्ष और नैतिक रूप से समझ सकता है तथा उनका विवरण प्रस्तुत कर सकता है। आम आदमी के

हाथों में इसे सौंपना पत्रकारिता का मजाक उड़ाने के बराबर ही है।

2005 में टोम गरुबिस ने इस विषय पर एक शोध कार्य भी किया, जिसमें आम आदमी की पत्रकारिता की एक साइट का रिव्यू किया गया। उसमें प्रसारित समाचार व सूचनाओं का फालोअप भी किया गया, जिसके नतीजतन पाया गया कि इस तरह की पत्रकारिता में सम्पादकीय सामग्री बहुत ही निम्न स्तर की भड़काऊ और किसी क्षेत्र व समुदाय विशेष से प्रभावित है। लेकिन इन सब आलोचनाओं के बावजूद भी हम यह दावा नहीं कर सकते कि व्यावसायिक पत्रकारिता और पत्रकार पूरी तरह से मर्यादा और कानूनी दायरे में रहते हुए पत्रकारिता कर रहे हैं। माध्यम या माध्यम में कार्यरत व्यक्ति चाहे जो भी हो लेकिन उनका निष्पक्ष, स्वार्थहीन, नैतिक और सन्तुलित होना आवश्यक है।

## सन्दर्भ

1. जय सिंह रावत, हिंदी पत्रकारिता दिवस 2021: हिंदी पत्रकारिता का डिजिटल स्वरूप और बदलते तेवर, प्रकाशन तिथि 30 मई 2021, लिंक : <https://www.amarujala.com/columns/blog/hindi-journalism-day-2020-and-change-in-hindi-journalism-and-rising-and-growth>
2. पंकज झा, वैकल्पिक मीडिया की ज़रूरत, प्रकाशन वर्ष 11 साल पहले, देखने की तिथि 6 जुलाई 2021, लिंक : <https://www.pravakta.com/alternative-media-have/>
3. हिमकर श्याम, समय के साथ बदली हिन्दी पत्रकारिता, प्रकाशन वर्ष 8 साल पहले, देखने की तिथि 6 जुलाई 2021, लिंक :

<https://www.pravakta.com/hindi-journalism-changed-over-time/>

4. उमेश चतुर्वेदी, वेब पत्रकारिता : चुनौतियां और संभावनाएं, प्रकाशन तिथि 6 मई 2015, लिंक :  
[http://mediakipathshala.blogspot.com/2015/05/blog-post\\_81.html](http://mediakipathshala.blogspot.com/2015/05/blog-post_81.html)
5. जागरण, उत्पीड़ित समुदायों की आवाज बना सोशल मीडिया, प्रकाशन तिथि 26

नवम्बर 2017, लिंक :

<https://www.jagran.com/himachal-pradesh/dharmshala-social-media-importance-for-dalit-17102115.html>